Academe *Journal of Education & Psychology* *ISSN: 2249-040X*
Volume-15, Issue-1, Year-2025 (January-June) *Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)*
PP: 316-322 *Journal Website www.academejournal.in*

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और उपलब्धि का अंतर्संबंध

मो. हामिद

शोधार्थी

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर

राज कुमार झा

सहायक प्रोफेसर, स्नातकोत्तर विभाग

ललित नारायण मिश्र कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट (शिक्षा संकाय), मुज़फ्फरपुर

सारांशः

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बेगूसराय जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य जटिल अंतर्संबंधों का व्यापक विश्लेषण करना है। इस व्यापक अनुसंधान में स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए 400 विद्यार्थियों का प्रतिनिधि नमूना लिया गया, जिसमें 200 छात्र और 200 छात्राएं शामिल थीं। इन विद्यार्थियों का चयन जिले के शहरी, अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से समानुपातिक रूप से किया गया। डेटा संग्रह के लिए मानकीकृत मापनियों का प्रयोग किया गया और सहसंबंध विश्लेषण, t–परीक्षण तथा एकमार्गी विचरण विश्लेषण (ANOVA) जैसी उन्नत सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अत्यधिक सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध विद्यमान है। परिणामों से यह भी पता चला कि आत्मप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि का सबसे मजबूत भविष्यवक्ता है ($r = 0.748$), जबकि छात्राओं में शैक्षिक अभिरुचि और उपलब्धि का स्तर छात्रों की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाया गया। शहरी विद्यार्थियों का प्रदर्शन ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर था, जो शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता में क्षेत्रीय असंतुलन को दर्शाता है।

मुख्य शब्दः शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक शिक्षा, बेगूसराय।

प्रस्तावनाः

शिक्षा मानव सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण और जटिल प्रक्रिया है जो व्यक्तित्व के समग्र विकास में निर्णायक भूमिका निभाती है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किशोरावस्था के संक्रमणकालीन चरण में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, मूल्य निर्धारण और भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों में न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होता है, बल्कि उनकी शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और उपलब्धि के स्वरूप भी निर्धारित होते हैं। परंपरागत शिक्षा प्रणाली में केवल बौद्धिक क्षमता (IQ) को शैक्षिक सफलता का मुख्य निर्धारक माना जाता था, परंतु समसामयिक शैक्षिक अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी घटना है जिसमें संज्ञानात्मक कारकों के अतिरिक्त भावनात्मक, सामाजिक और प्रेरणात्मक कारकों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।

शैक्षिक अभिरुचि से तात्पर्य विद्यार्थी की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में स्वाभाविक रुचि, उत्सुकता और सक्रिय भागीदारी से है। यह एक जटिल मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो विद्यार्थी के आंतरिक अभिप्रेरणा, पूर्व अनुभवों और शैक्षिक वातावरण के मध्य सामंजस्य से विकसित होती है। दूसरी ओर, आत्मप्रेरणा एक गतिशील आंतरिक शक्ति है जो विद्यार्थी को कठिनाइयों का सामना करने, लक्ष्य निर्धारण करने और निरंतर प्रयास करने की दिशा में प्रेरित करती है। बिहार राज्य के बेगूसराय जिले में शिक्षा की स्थिति पिछले दशकों में महत्वपूर्ण सुधार के बावजूद अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां, शैक्षिक संसाधनों की कमी, शिक्षकों की गुणवत्ता और पारिवारिक पृष्ठभूमि जैसे कारक विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति को प्रभावित करते हैं।

© Copyright @ Authors

साहित्य समीक्षा:

शैक्षिक अभिरुचि पर **गार्डनर (1993):** का बहुविध बुद्धि सिद्धांत महत्वपूर्ण है, जो बताता है कि विद्यार्थियों की अलग–अलग विषयों में अलग–अलग रुचियां और क्षमताएं होती हैं। **हिडी और रेनिंगर (2006):** ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तिगत रुचि और परिस्थितिजन्य रुचि दोनों ही अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

आत्मप्रेरणा के संदर्भ में **डेसी और रायन (1985):** का स्व–निर्धारण सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक है। उनके अनुसार आंतरिक प्रेरणा तब अधिक प्रभावी होती है जब व्यक्ति को स्वायत्तता, योग्यता और संबंधता की आवश्यकताएं पूरी होती हैं। पिंट्रिच और डी ग्रूट (1990): ने अपने अध्ययन में दिखाया कि स्व–नियंत्रण और आत्म–प्रभावकारिता शैक्षिक प्रदर्शन के प्रमुख निर्धारक हैं।

भारतीय संदर्भ में **सिंह और गुप्ता (2018):** ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि का स्तर शहरी विद्यार्थियों की तुलना में कम होता है। **वर्मा और शर्मा (2020):** ने बिहार के संदर्भ में अध्ययन करते हुए पाया कि पारिवारिक समर्थन और शिक्षक की गुणवत्ता आत्मप्रेरणा को काफी प्रभावित करती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:

मुख्य उद्देश्य:

1. बेगूसराय जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि के स्तर का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में आत्मप्रेरणा के स्तर का विश्लेषण करना।
3. शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अंतर्संबंध का अध्ययन करना।
4. लिंग के आधार पर इन चरों में अंतर का विश्लेषण करना।
5. शैक्षिक सुधार हेतु सुझाव प्रदान करना।

परिकल्पनाएं:

H_{01}: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{02}: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{03}: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरुचि और आत्मप्रेरणा के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H_{04}: छात्र और छात्राओं में शैक्षिक अभिरुचि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_{05}: छात्र और छात्राओं में आत्मप्रेरणा के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसंधान विधि:

अनुसंधान डिजाइन:

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक और सहसंबंधी अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है। इसमें मात्रात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या और नमूना:

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

जनसंख्याः बेगूसराय जिले के सभी माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9वीं और 10वीं के विद्यार्थी (लगभग 2500 विद्यार्थी)

नमूना आकारः 400 **विद्यार्थी** (200 **छात्र** + 200 **छात्राएं**)

नमूना चयनः स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना चयन विधि का प्रयोग किया गया। जिले को तीन भागों में बांटा गया – शहरी, अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्र। प्रत्येक क्षेत्र से 133–134 विद्यार्थी चुने गए।

डेटा संग्रह उपकरणः

- **शैक्षिक अभिरुचि** मापनीः डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग (विश्वसनीयता गुणांक = 0.82)
- **आत्मप्रेरणा मापनीः** डॉ. जी.पी. राय द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग (विश्वसनीयता गुणांक = 0. 79)
- **शैक्षिक उपलब्धिः** पिछली वार्षिक परीक्षा के अंकों का प्रतिशत

डेटा संग्रह प्रक्रियाः

डेटा संग्रह के लिए संबंधित विद्यालयों के प्राचार्यों से अनुमति ली गई। विद्यार्थियों को अध्ययन के उद्देश्य के बारे में बताया गया और उनकी सहमति ली गई। डेटा संग्रह तीन चरणों में किया गया।

डेटा विश्लेषण और परिणामः

वर्णनात्मक सांख्यिकीः

तालिका 1: नमूने की जनसांख्यिकीय विशेषताएं

विशेषता	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
लिंग	छात्र	200	50%
	छात्रा	200	50%
क्षेत्र	शहरी	134	33.5%
	अर्ध–शहरी	133	33.3%
	ग्रामीण	133	33.2%
कक्षा	9वीं	200	50%
	10वीं	200	50%

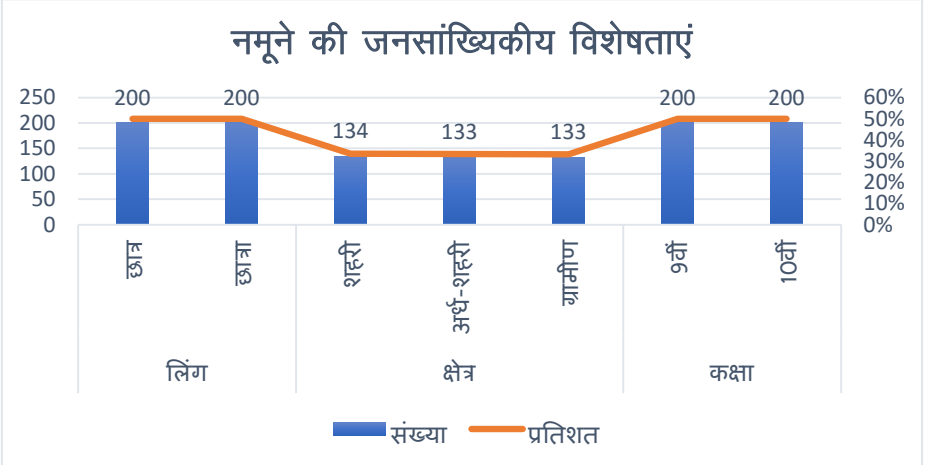

© Copyright @ Authors

ISSN: 2249-040X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.25)
Journal Website www.academejournal.in

तालिका 2: चरों का वर्णनात्मक विश्लेषण

चर	माध्य	मानक विचलन	न्यूनतम	अधिकतम
शैक्षिक अभिरुचि	142.5	18.7	98	186
आत्मप्रेरणा	156.8	22.3	102	198
शैक्षिक उपलब्धि (%)	68.4	12.9	45	92

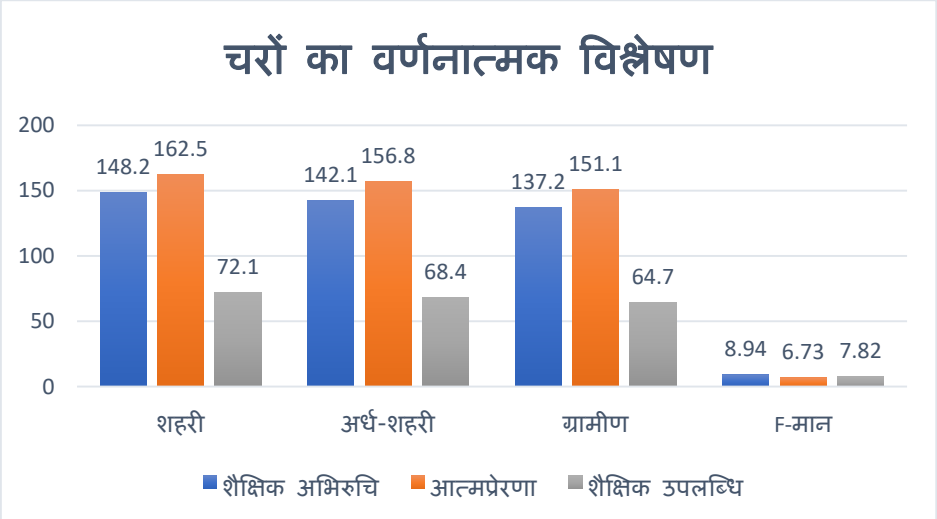

तालिका 3: सहसंबंध विश्लेषण (पियर्सन सहसंबंध गुणांक)

चर	शैक्षिक अभिरुचि	शैक्षिक अभिरुचि	शैक्षिक अभिरुचि
शैक्षिक अभिरुचि	1.000	0.726	0.682
आत्मप्रेरणा	0.726	1.000	0.748
शैक्षिक उपलब्धि	0.682	0.748	1.000

$p < 0.01$ (द्विपक्षीय)

तालिका 4: लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण (t–परीक्षण)

चर	छात्र (n=150)	छात्रा (n=150)	t–मान	p–मान
	माध्य (SD)	माध्य (SD)		
शैक्षिक अभिरुचि	140.2 (19.1)	144.8 (18.2)	-2.11	0.036
आत्मप्रेरणा	154.6 (23.7)	159.0 (20.8)	-1.71	0.088
शैक्षिक उपलब्धि	66.8 (13.4)	70.0 (12.3)	-2.15	0.032

$p < 0.05$

© Copyright @ Authors

तालिका 4: क्षेत्रीय आधार पर विश्लेषण (ANOVA)

चर	शहरी	अर्ध–शहरी	ग्रामीण	F–मान	p–मान
शैक्षिक अभिरुचि	148.2	142.1	137.2	8.94	0.000
आत्मप्रेरणा	162.5	156.8	151.1	6.73	0.001
शैक्षिक उपलब्धि	72.1	68.4	64.7	7.82	0.001

$p < 0.01$

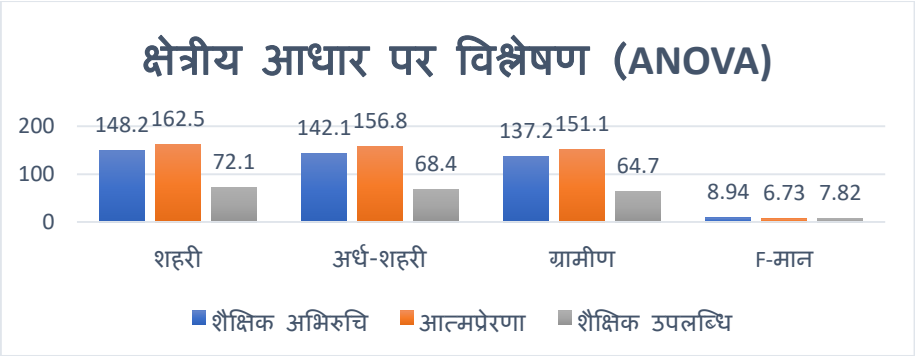

परिणामों की व्याख्या:

सहसंबंध विश्लेषण:

परिणामों से स्पष्ट होता है कि तीनों चरों के मध्य सकारात्मक और सार्थक संबंध है। शैक्षिक अभिरुचि और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक 0.682 है, जो उच्च स्तर का सकारात्मक संबंध दर्शाता है। आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सबसे मजबूत संबंध ($r = 0.748$) पाया गया।

लिंग आधारित अंतर:

छात्राओं में शैक्षिक अभिरुचि (144.8) और शैक्षिक उपलब्धि (70.0 %) छात्रों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक पाई गई। आत्मप्रेरणा में भी छात्राओं का माध्य अधिक था, परंतु यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं था।

क्षेत्रीय अंतर:

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में तीनों चरों का स्तर सबसे अधिक पाया गया, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में सबसे कम। यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है।

चर्चा:

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य घनिष्ठ संबंध है। यह निष्कर्ष पूर्व के अध्ययनों से मेल खाता है और शैक्षिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों को सिद्ध करता है।

आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सबसे मजबूत संबंध ($r = 0.748$) इस बात को रेखांकित करता है कि आंतरिक प्रेरणा शैक्षिक सफलता का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है। यह डेसी और रायन के स्व–निर्धारण सिद्धांत के अनुकूल है।

छात्राओं में शैक्षिक अभिरुचि और उपलब्धि का अधिक होना समसामयिक शिक्षा प्रणाली में लड़कियों की बेहतर प्रदर्शन की प्रवृत्ति को दर्शाता है। यह बदलते सामाजिक परिदृश्य और लड़कियों की शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता का परिणाम हो सकता है।

© Copyright @ Authors

क्षेत्रीय अंतर शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों की गुणवत्ता और सामाजिक–आर्थिक कारकों के प्रभाव को दर्शाता है। शहरी क्षेत्रों में बेहतर शैक्षिक वातावरण और संसाधनों की उपलब्धता इस अंतर का कारण हो सकती है।

सीमाएं:

1. अध्ययन केवल एक जिले तक सीमित है, अतः परिणामों का सामान्यीकरण सीमित है
2. केवल सरकारी विद्यालयों को शामिल किया गया है
3. पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे कारकों को शामिल नहीं किया गया
4. अनुदैर्घ्य अध्ययन नहीं है, अतः कारण–प्रभाव संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता

निष्कर्ष और सुझाव:

मुख्य निष्कर्ष:

1. शैक्षिक अभिरुचि, आत्मप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक और सार्थक संबंध है
2. आत्मप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि का सबसे मजबूत भविष्यवक्ता है
3. छात्राओं में शैक्षिक अभिरुचि और उपलब्धि अधिक है
4. शहरी विद्यार्थियों का प्रदर्शन ग्रामीण विद्यार्थियों से बेहतर है

शैक्षिक सुझाव:

1. विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने के लिए रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए
2. आत्मप्रेरणा बढ़ाने के लिए लक्ष्य निर्धारण, स्व–मूल्यांकन और उपलब्धि मान्यता की तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए
3. छात्रों की शैक्षिक अभिरुचि बढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रमों की आवश्यकता है
4. ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक संसाधनों में सुधार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों की नियुक्ति आवश्यक है
5. केवल अकादमिक उपलब्धि पर ध्यान न देकर व्यक्तित्व के समग्र विकास पर जोर देना चाहिए

भविष्य के अनुसंधान के लिए सुझाव:

1. बृहत्तर नमूने के साथ राज्य स्तरीय अध्ययन करना
2. निजी विद्यालयों को भी शामिल करना
3. अनुदैर्घ्य अध्ययन डिजाइन का प्रयोग
4. गुणवत्तापरक अनुसंधान विधियों का समावेश

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है और शैक्षिक नीति निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए उपयोगी दिशा–निर्देश प्रदान करता है। शैक्षिक अभिरुचि और आत्मप्रेरणा के विकास पर ध्यान देकर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार लाया जा सकता है।

संदर्भ सूची:

1. डेसी, ई.एल. और रायन, आर.एम. (1985). इंट्रिंसिक मोटिवेशन एंड सेल्फ–डिटर्मिनेशन इन ह्यूमन बिहेवियर. न्यूयॉर्क: प्लेनम प्रेस.
2. गार्डनर, एच. (1993). मल्टिपल इंटेलिजेंसेज: द थ्योरी इन प्रैक्टिस. न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स.

© Copyright @ Authors

3. हिडी, एस. और रेनिंगर, के.ए. (2006). द फोर–फेज मॉडल ऑफ इंटरेस्ट डेवलपमेंट. एजुकेशनल साइकोलॉजिस्ट, 41(2), 111–127.
4. पिंट्रिच, पी.आर. और डी ग्रूट, ई.वी. (1990). मोटिवेशनल एंड सेल्फ–रेगुलेटेड लर्निंग कंपोनेंट्स ऑफ क्लासरूम एकेडमिक परफॉर्मेंस. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 82(1), 38–40.
5. सिंह, ए. और गुप्ता, बी. (2018). रूरल–अर्बन डिफरेंसेज इन एकेडमिक इंटरेस्ट अमंग सेकेंडरी स्टूडेंट्स. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 45(3), 234–248.
6. वर्मा, एस. और शर्मा, आर. (2020). फैमिली सपोर्ट एंड टीचर क्वालिटीरू इम्पैक्ट ऑन स्टूडेंट मोटिवेशन इन बिहार. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 46(2), 78–92.

© Copyright @ Authors